इकाई 2 वास्तु की अवधारणा

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 वास्तु की अवधारणा

2.2.1 वास्तुशास्त्र का धर्म से सम्बन्ध

2.2.2 वास्तु लक्षण एवं स्वरूप

2.2.3 ग्रामवास विचार

2.3 भूमि परीक्षा एवं खात विचार

2.3.1 शल्यानयन प्रकार

2.3.2 गृह के समीप शुभाशुभ वस्तुएँ

2.3.3 मुख्यद्वार विचार

2.3.4 द्वार वेध विचार

2.4 सारांश

2.5 शब्दावली

2.6 उपयोगी पुस्तकें

2.7 बोध प्रश्न

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप:

- वास्तु की अवधारणा को बतायेंगे।
- वास्तुशास्त्र एवं इसके धर्मिक महत्व के बारे में बतायेंगे।
- वास्तु लक्षण एवं ग्रामवास का विचार करेंगे।
- चारों वर्णों के अनुसार भूमि लक्षण तथा इसके फल का कथन करेंगे।
- शल्या नयन प्रकार तथा गृह के समीप शुभाशुभ वस्तुओं के बारे में भी बतायेंगे।
- मुख्यद्वार भवन में कहाँ होना चाहिए तथा द्वार वेध का भी निर्णय कर पायेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इन्दिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में संचालित वास्तुशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के अन्तर्गत वास्तुशास्त्र के स्वरूप एवं इतिहास नामक प्रथम पाठ्यक्रम की खण्ड एक ‘‘वास्तुशास्त्र का स्वरूप ‘‘नामक उपशीर्षक के अन्तर्गत यह दूसरी इकाई है। इस इकाई का नाम है ‘‘ वास्तु की अवधारणा ‘‘ इस

बात को हम इस प्रकार समझ सकते है कि वास्तु की अवधारणा देव तथा मानव मात्र का एक प्रकार का विशिष्ट बन्धन है जिसे हम वास्तु कहते हैं। मानव जीवन को प्रभावित करने वाले बहुत से सकारात्मक कारक हैं, परन्तु वास्तु ही एक ऐसा ज्ञान है जो हमारे एश्वर्य को बहुत आगे तक ले जाता है और हमारे जीवन को आनन्द पूर्ण बनाता है।तथा बाहरी समस्याओं से भी निजात दिलाता है, दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते है कि यह एक चमत्कारिक, रहस्यमय और आध्यात्मिक ज्ञान को प्रदान करता है जिससे कि इस जीवन से परे भी पुण्य फल की प्राप्ति होती है। इसके अलावा हमारे पूर्वज हम से कहीं ज्यादा खुश, सुखी एवं समृद्ध थे, शान्ति तथा स्फूर्ति की सकारात्मक भावनाओं से भरे हुए थे। सुख और समृद्धि के साथ अपना नित्य जीवन ब्यतित करते थे जोकि आज –कल की भाग – दौड़ भरी जिन्दगी से कही ज्यादा उत्पादक तथा सकारात्मक था। आज कल की हमारी वर्तमान पीढ़ी जो की बहुत बड़े –बड़े सपने देखतें है अच्छे वेतन भोगी है, तथा सारी सुख सुविधा के साथ सम्पन्न आधुनिक मकानों में रहते हैं, लेकिन अपना धन- सम्पदा एकत्रित करने के बावजूद भी अनेकों प्रकार के आधुनिक व्यसनों से पूर्ण जीवन चर्या के कारण बीमारियों तथा रोगों से ग्रसित रहते हैं। अति व्यस्तता से पूर्ण आधुनिक जीवन शैली व्यक्ति को बीमार, आलसी तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से पीड़ित बना देती है, यदि ऐसा व्यक्ति परिवार का मुखिया हो तो या कुछ कमाने वाला हों तो फिर स्थिति और ख़राब होती है, यहाँ पर हम देखतें है कि आज के परिवेश में मात्र 20 या 22 वर्ष का अथवा 30 या 40 वर्ष के ब्यक्तियों को असमय ही आधुनिक जीवन शैली के कारण घातक बीमारी से जीवन लीला समाप्त हो जा रही है पुरातन काल से हमारे पूर्वज संयुक्त परिवार में रहते आये है तथा इनकी आयु भी अधिक होती थी। जीवनशैली भी बहुत उत्तम था, चूँकि वास्तु एक बहुत ही विस्तृत तथा उपयोगी ज्ञान है जो की सम्पूर्ण भारत में, वैदिक काल से ही प्रचलित है, तथा इसका प्रमाण हमारे एतिहासिक इमारतों एवं राष्ट्रीय धरोहरों में दृष्टि गोचर होता है जिसका नीव आज भी हमारे पूर्वजों द्वारा वास्तु के सिद्धान्तों की अवधारणा की ओर ध्यान आकर्षित करवाता है। वास्तु की अवधारणा मूल रूप से मानव समाज को सुखी तथा वास्तु के अनुरूप बने भवन में निवास से है ,जो कि मानव समाज को आरोग्यता तथा सुख, शान्ति, की व्यवस्था प्रतिपादित करता है साथ ही इस पाठ के अध्ययन से आप सभी इसके महत्व को बताते हुए समाज को जागृत करके स्वयं को भी लाभान्वित करेंगे।

2.2 वास्तु की अवधारणा

वास्तु की अवधारणा मानव जीवन के कई पहलुओं के लिए फायदेमंद साबित होता रहा है। वास्तु का उपयोग आमतौर पर लोग बेहतर जीवन जीने की इच्छा से करते हैं, चूँकि समय बीतने के साथ –साथ लोगों ने वास्तुशास्त्र का पालन और उपयोग करना आरम्भ कर दिया है, लेकिन क्या हमने कभी वास्तुशास्त्र के इतने जबरजस्त उपयोग के पीछे के वास्तविक कारण के बारे में सोचा है, इसकी इतनी सराहना क्यों की जाती है और यह लोगों को इतना मोहित क्यों करती है , वास्तुशास्त्र की अवधारणा आम तौर पर प्रकृति के तत्वों पर तथा दिशाओं पर आधारित है । वास्तु के अनुसार प्रत्येक दिशा के लिए एक निश्चित नियम होता है जीवन के आठ प्रमुख बातों को आठ दिशाओं की सहायता से समझा जा सकता है इन सभी दिशाओं में सही उर्जा का प्रवाह अत्यन्त सहायक होता है। वास्तु की अवधारणा में प्रकृति के पञ्च तत्व भी शामिल है। इन पांच तत्वों को पञ्चमहाभूत कहते है, जिसमें वायु ,जल ,पृथ्वी ,आकाश और अग्नि ये पांच तत्व है जो पञ्च भूतों का निर्माण करता है। जब इन पांच तत्वों का उपयोग और सही तरीके से किया जाय तो व्यक्ति को आम तौर पर सभी अच्छाई और सौभाग्य और

भाग्य का आशीर्वाद मिलता है। अगर ये दोनों अवधारणाएं पूर्णतया काम करें, तो व्यक्ति का जीवन खुशियों और उल्लास से भरा हो सकता है। इससे व्यक्ति को अधिक आध्यात्मिक जीवन जीने में भी मदद मिलेगी। साथ ही उस घर में रहने वाले लोगों की आवश्यकताओं के आधार पर एक घर का निर्माण किया जाता है। चूँकि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास वास्तुशास्त्र के अनुसार बने हुए भवन में रहने वाले लोगों का व्यक्तित्व को बढ़ाने में मदद करता है, अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों में सुधार भी वास्तु की उपादेयता है क्योंकि वास्तु आप के आस –पास रहने वाले अन्य लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ाने में सहायक है क्योंकि एक ही भवन में रहने वाले कई लोग एक साथ मिल –जुल कर रहते है तथा सौहार्द पूर्ण वातावरण बना रहता है। और भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वास्तु लोगों में आन्तरिक ज्ञान और आध्यात्मिकता को विकसित करने में भी मदद करता, मानसिक शान्ति के साथ एक शुद्ध और स्वच्छ वातावरण प्रदान करता है, इसलिए यह मानसिक समर्थन के साथ मानसिक शान्ति भी प्रदान करता है। वास्तु व्यक्ति के जीवन में स्वास्थ्य धन की वृद्धि में मदद करता है, यह लोगों के परिवेश के प्रति अधिक सतर्क और जागरूक बनाता है साथ ही उर्जावान और भी बनाता है मन में अच्छे विचार आते रहते हैं।

इन उक्त बातों से ये तो स्पष्ट होता है कि वास्तुशास्त्र जीवन में आवश्यक है और यह व्यक्ति को अच्छे तरह से जीने में मदद करता है वास्तु का उद्देश्य लोगों के जीवन में सकारात्मक उर्जा को केन्द्रित करना है जिससे कि आनेवाले समय में जो भी शुभ कार्य करना चाहे उसमें सफलता प्राप्त कर सकें।

यह भी स्पष्ट है कि जो लोग वास्तुशास्त्र के अनुसार बने हुए घर में रहते है वे बिना वास्तु के अनुरूप बने हुए घरों में रहने वाले लोगों की तुलना में बेहतर और समृद्ध जीवन जीते हैं। वास्तु अनुपालन वाले गृह निवासियों को सौर उर्जा, चन्द्र उर्जा और ब्रह्मांडीय बलों का लाभ मिलने में सहायता प्राप्त होती है। हांला कि घर के निर्माण के समय वास्तु के सभी नियमों का पालन करना हमेशा सम्भव नहीं होता है, लेकिन इसे रहने के लिए अच्छा जगह बनाने के लिए वास्तु के कम से कम कुछ नियमों को लागू करने की सलाह दी जाती है। कुछ लोगों का मानना है कि वास्तु के अनुरूप घरों में रहने से आप के जीवन में सफलता का उम्मीद ज्यादा रहता है क्योंकि वास्तु का मन्त्र लोगों को सुखद बनाता है। चूँकि वास्तु से जो भी लाभ होता है वह अधिकतर आध्यात्मिक स्थिति में ही प्राप्त होता है, इसका आशय यह है कि आप को तात्कालिक भौतिक सफलता तो नहीं दिखेगी परन्तु वास्तव में अध्यात्मिकता से अर्थात् सात्विकता से मानव जीवन में समृध्दि प्राप्त होती है वास्तुशास्त्र के नियमों अथवा अवधारणा को पालन करना इतना कठिन नहीं है, वास्तु के अधिकांश नियम घरों के निर्माण और उनके उचित रखरखाव के ही सन्दर्भ में है इन सभी बातों को आप लोग क्रमशः अध्ययन करेंगे।

2.2.1 वास्तु का धर्म से सम्बन्ध

इस संसार में जितनी भी मानव मानव सभ्यताएं है उन सब में भवन निर्माण को एक सांसारिक कृत्य माना गया है। जब कि भारत में भवन निर्माण एक धार्मिक कृत्य है, भारत में भवन निर्माण का हेतु पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि है । जब तक कि हम इस धार्मिक रहस्य को नहीं समझ पायेंगे तब तक वास्तु के रहस्य को समझना बहुत कठिन है। यदि भवन निर्माण की कला को धर्म से पृथक कर दिया जाय तो अथवा वास्तु विज्ञान को निकाल दिया जाय तो उसकी

कीमत शून्य हो जाती है। क्योंकि वह केवल ईंट पत्थर, लोहे – सीमेंट का ढेर ही है और कुछ नहीं।

लाखों हजारों रूपये खर्च होते हैं, बहुत भारी उत्सव होता है, विवाह तो बार –बार हो सकता है पर यज्ञोपवीत जीवन में एक बार ही होता है।

यज्ञोपवीत संस्कार से व्यक्ति का इसलोक में दूसरा जन्म होता है। उसको देवत्व की प्राप्ति होती है। यज्ञोपवीत में से यदि धार्मिकता निकाल दिया जाय तो वह मात्र सूत का धागा है। जिसकी कीमत नहीं होगी।

इससे स्पष्ट होता है कि भवन कला में धर्मिक पक्ष को निकाल दिया जाय तो वह लोहे – सीमेंट – रेत के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। वह शून्य है। नि : सन्देह यज्ञोपवीत संस्कार से मनुष्य का दूसरा जन्म होता है, उसे द्विजत्व की एवं देवत्व की प्राप्ति होती है। पर यसोपवीत या राखी में से यदि श्रद्धा, विश्वास, आस्था व धार्मिकता निकाल दिया जाय तो वह मात्र सूत्र (धागा) बनकर रह जाता है। जिसकी कोई कीमत नहीं रह जाती।

इस संसार में सत्य के साक्षात्कार हेतु तीन प्रमाण माने गये हैं, प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आप्त वाक्य। वास्तु आप्त वाक्य पर आधारित प्रत्यक्ष ज्ञान है। हमारे सत्य खोजी ऋषियों ने अपने आप को तिल – तिल जलाकर वास्तुशास्त्र के ज्ञान को जीवित रखा। उन्हीं ऋषियों के प्रति आभार मानते हुए हमें ज्ञान- विज्ञान की इस निर्मल धारा को आगे बढ़ाना है। तभी वास्तुशास्त्र की पवित्रता दीर्घ जीवी रहेगी। भारत में भवन निर्माण एक धार्मिक कृत्य है जिससे पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि होती है।

धार्मिक मान्यताओ के अनुसार भवन बनवाने से पूर्व वास्तु पूजन इत्यादि करने के बाद ही (अथवा भूखण्ड खरीदने से पूर्व वास्तु नियमों के अनुसार भूमि की परीक्षा एवं पूजन जरूर करना चाहिए) भवन बनवाने से पूर्व शुभ मुहूर्त में भूमि पूजन, नींव पूजन करना चाहिए। भवन पूरा बन जाने के बाद विविध प्रतिष्ठा, वास्तु पूजा, गायत्री-जप, गणपति पूजन ,नवग्रह पूजन एवं सम्पूर्ण ग्रह शान्ति हवन करना अथवा ब्राह्मण के द्वारा कराना चाहिए। जप के दशांश हवन यज्ञ का विधान है। उसका दशांश ब्राह्मण भोजन, दक्षिणा पूर्वक करना चाहिए। शास्त्रों में तो भवन की कुल लागत का दशांश प्रतिष्ठा कार्य में खर्च करने का निर्देश दिया गया है। विश्वकर्मा प्रकाश में तो स्पष्ट लिखा है कि जो लोग खर्च के लोभ में, नास्तिक भाव से अथवा आलस्य (प्रमाद) से पूजा नहीं करते उन लोगों का एश्वर्य नष्ट हो जाता है। वे अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं तथा उनके प्रत्येक कार्य में विघ्न-वाधा एवं रूकावटे आती है, तथा वे लोग वास्तु पुरुष के कोप दोष का भाजन होकर दुर्भाग्य के चक्कर में फस जाते हैं। यथा –

आश्रियं मृत्युमाप्नोति विहनतस्य पदे पदे।
वास्तु पूजां अकुर्वाण: तवाहारो भविष्यति ॥ (विश्वकर्मा प्रकाश अ . 1 / श्लोक 17)

पाश्चात्य संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति (वास्तु कला) में यही मुलभुत अन्तर है। पाश्चात्य संस्कृति आत्म केन्द्रित संकुचित ,अपरोपकारी, एवं अधार्मिकता से परिपूर्ण होती है। कबूतरों को चुग्गा देना, चिडियों को पानी पिलाना, कुत्ते व गाय को रोटी देना, पीपल, तुलसी का पूजन वृक्षों को पानी पिलाना, ब्राह्मणों को भोजन से तृप्त कर आशीर्वाद लेना उनकी संस्कृति का अंग नही है।

एक बार की बात है कि जिज्ञासु ऋशियों ने देवतओं के शिल्पी भगवान विश्वकर्मा से पूछा कि वास्तु तो देव विद्या है । इसे मानव को क्यों बताया जाय, तथा मनुष्य के लिए इसकी क्या उपयोगिता है, इस बात पर भगवान विश्वकर्मा स्वयं अपने मुखारविंद से कहते हैं –

इस शिल्प शास्त्र, वास्तु विज्ञान के ज्ञान से मनुष्य मात्र को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है जिससे उसका मानव जीवन सार्थक हों जाता है । साथ ही इस मृत्यु लोक में ही वह मनुष्य देवत्व को प्राप्त कर जाता है । वह चमत्कारी हों जाता है तथा दूसरों का कल्याण, मंगल करने में समर्थ हो जाता है । और भी कहा गया है –

इदं पवित्रं परमं रहस्यं य : पठेन्नर : ।
स्यातस्यावित्तथा वाणी सत्यं सत्यं वदाम्यहम ॥ (विश्वकर्मा प्रकाश अ . 39 श्लोक सं . 111)

इस परम पवित्र एवं रहस्यमय (गुप्त) विद्या को मनुष्य भलीभांति पढ़ कर समझ लेता है । उसकी वाणी सदैव सत्य एवं सफल होती है, अर्थात् कभी भी निष्फल नहीं होता है ।

2.2.2 वास्तु लक्षण एवं स्वरूप

प्राचीन काल में बड़े – बड़े राजप्रसाद, किले ,देवमन्दिर, विद्यालय तालाब, कूप बावड़ी, बगीचे से लेकर सामान्य निवास स्थान बनाने के लिए वेद – पुराण व शास्त्रों में वर्णित वास्तु विद्या, स्थापत्य कला को आधार मानकर विचार किया जाता है ।वास्तुशास्त्र में सुख –समृद्ध के लिए कई तरह के नियम बनाये गये हैं । जिसका पालन करने से घर पर सकारात्मक उर्जा का संचार होता है । साथ ही घर पर वास्तु दोष होने से कई तरह की परेशानियां आती है । जिसमें प्रमुख रूप से धनहानि, मानसिक प्रताड़ना और अशान्ति का सामना करना पड़ता है । वास्तु के अनुसार कुछ घर में वास्तु दोष ऐसे होते हैं जिन्हें आप भूल कर भी न करें नजरअंदाज । दक्षिण मुखी घर होने पर मुख्य दरवाजा दक्षिण मुखी हो तो इस वास्तु दोष को दूर करने के लिए घर के मुख्य दरवाजे पर पंचमुखी हनुमान जी के फोटो को लगानी चाहिए । इसके अलावा मुख्यद्वार पर शीशा लगाने से भी वास्तु दोष दूर होता है । एक ही साथ कई दरवाजे होने पर इसे बड़ा वास्तु दोष माना जाता है, अगर आप के घर में बड़ा वास्तु दोष है तो सबसे पहले दरवाजे पर विंड चाइम लगवाना चाहिए । वास्तु में घर की रसोई के लिए सबसे उपयुक्त दिशा आग्नेय ही होता है ऐसे में अगर इस दिशा में रसोई नहीं है तो घर के पूर्व दिशा जिसे ईशान कोण कहते हैं उस स्थान पर भगवान गणेश की मूर्ति लगाना चाहिए । अगर आप के घर में जिस कोने में वास्तु दोष है वहाँ पर कपूर के दो टुकड़े रखें तो घर पर हमेशा सकारात्मक उर्जा आती रहेगी ।ईशान कोण घर का सबसे शुभ स्थान होता है इसी कोने में भगवान का वास होता है । एसे में अगर घर के ईशान कोण में किसी तरह का वास्तु दोष है तो इस दिशा में तुलसी का पौधा लगाना चाहिए । वास्तुशास्त्र के अनुसार घर का उत्तर – पूर्व कोना बहुत ही शुद्ध एवं सकारात्मक माना जाता है, इसे ईशान कोण भी कहते हैं ।इस जगह पर कभी डस्टबिन या भारी सामान नहीं रखना चाहिए । वास्तु में नल से लगातार पानी टपकना शुभ नहीं माना जाता है ,नल से पानी टपकते रहने से धन का खर्च अधिक मात्रा में होने लगता है और इससे आर्थिक परेशानियां उत्पन्न होती है, इसी लिए शुभ नहीं माना जाता है । वास्तु के अनुसार घर में रसोई घर पश्चिम दिशा में शुभ मानी जाती है लेकिन यहां पर भोजनालय होने से खर्च भी काफी बड़ता है । अगर किसी के घर की ढलान उत्तर – पूर्व की दिशा में उचां हो तो इससे धन की आवागमन में

रुकावटें आती है। वास्तु के अनुसार वेडरूम में आईना नहीं होना चाहिए इससे पति – पत्नी में झगड़े होते हैं।

अन्तरिक्ष का सबसे अधिक उपयोग वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्णतया किया जा सकता है, इस लिए कमरों का निर्माण सही तरीके से और सही जगह पर किया जाता है यह निवासियों को वास्तुशास्त्र के दर्शन से सबसे अधिक लाभ प्राप्त करने की अनुमति देता है। वास्तुशास्त्र का उपयोग तब किया जा सकता है जब जीवन को बेहतर बनाने की अनुमति परमात्मा की ओर से प्राप्त होती हो तो, चूँकि नुकसान और समस्या जीवन का ही एक अंग है, लेकिन इसके साथ जीवन जीना सीखना होगा। जब कोई व्यक्ति जीवन में दर्द भरे समय से गुजरता है तो मानसिक समर्थन देने की बात आती है तो उस समय वास्तु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चूँकि वास्तु हमें जीवन में मजबूत और शक्तिशाली बनने में सहायक होता है। यह आम तौर पर एक कला का रूप है जो जो निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। वास्तुशास्त्र का लक्ष्य है व्यक्ति के जीवन को खुशहाल बनाना अगर कोई चीज हमें परेशान करती है तो वास्तु हमारे जीवन को आराम दायक बनाता है। साथ ही हमें मानसिक और भौतिक दुनियां का दोहरा लाभ भी प्रदान करता है। चूँकि विदेशों में भी भारतीय वास्तु कला को लेकर बहुत ही गम्भीर चिन्तन हुआ, इस विषय में जर्मनी में सबसे पहले भारतीय वास्तु ज्ञान, को अंग्रेजी भाषा एवं अन्य भाषाओं में नवीन परिभाषाओं के साथ मुखरित होकर फैलने लगा। अब विदेशों में भी जब भी कोई भवन बनता है तो सबसे पहले भवन का मुख्यद्वार किधर हो, जल स्थान कहां बनाएं, पाकशाला में अग्नि स्थान कहां हो, शयन कक्ष भी उत्तर – दक्षिण चुम्बकीय तरंगों को देख कर बनाया जाता है ताकि सोनेवाले को भरपुर नींद आ सके, और यह सबकुछ भारतीय वास्तुशास्त्र के मानक माप दण्डों पर आधारित होता है। और भी मुख्य बात यह है कि विश्व के अत्याधुनिक कहे जानेवाले प्रगतिशील वैज्ञानिक देश भी अब वेदों में रूचि लेकर भवन निर्माण करने लगे हैं। अभी कुछ समय पूर्व विगत 20 जनवरी 1995 को "लांस एन्जिल्स" में अमेरिका के कारीगरों ने विश्व के अथर्ववेद के स्थापत्य शास्त्र पर आधारित पहला मकान बना लेने का दावा किया है। श्री किरीट कुमार पटेल अपने उपनगरीय मकान में सूर्योपासना करना चाहते थे लेकिन उनके पश्चिमाभिमुख मकान में यह इच्छा पूरी नहीं हो रही थी। इसलिए उन्होंने, अपने भवन निर्माता मोरिस शिंडलर से पूर्वाभिमुख मकान बनाने पर जोर दिया और फिलान्देफिया का यह भवन निर्माता इस काम में जुट गया। वास्तु शिल्प के तीन हजार वर्ष पुराने वैदिक सिद्धांतों का उन्होंने सहारा लिया। अथर्व वेद में शामिल 1000 ई . पूर्व के स्थापना शास्त्र के सिद्धांतों से उन्हें लाभ मिला।

गावों, कस्बों और छोटे शहरों में मनुष्य अपनी इच्छानुसार भूखण्ड खरीदकर, वास्तु विषयों के नियमों के अनुसार द्वार – खिड़किया एवं भवन बना सकते हैं। परन्तु महानगरों में बने –बनाये हाऊसिंग बोर्ड के मकान एवं प्लैट खरीदने वालों के पास आमुलचुक परिवर्तन करने का विकल्प नहीं होता है। बाम्बे, मद्रास, कलकता जैसे शहरों में इस तरह की समस्या बहुत है। कि व्यवसाय नहीं चल रहा है, पत्नी बीमार रहती है शत्रु बढ़ रहे हैं इत्यादि परन्तु इस बात पर गौर करना चाहिए कि कहीं आपके घर का वास्तु खराब तो नही है जिसके चलते इस प्रकार की समस्याए आ रही है जी हां इसके लिए उस फ्लैट में कोणात्मक दिशा – शोधन करके, जल स्थान, अग्नि स्थान, पूजास्थल, शयन कक्ष में पलंग इत्यादि की दिशा बदलकर, सीढियों और खिडकियों की संख्या में हल्का सा परिवर्तन करके भवन सम्बन्धित उसके दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है।

2.2.3 ग्रामवास विचार

निवास के लिए देश –ग्राम स्थान के चयन में जलवायु, पंचभू तत्व, ग्रह, मास, नक्षत्र, आय, काकिणी इत्यादि परिशुद्ध होना चाहिए।

सुख, धन –धान्य, एश्वर्य, सन्तति सहित निरन्तर सुख के लिए गृह का सुलक्षण होना आवश्यक है। मनुष्य की सुख –सुबिधा हेतु देश, पुर – ग्राम निवास व आसन (शयन, यान, उपवेशन) ये सभी समान रूप से अपेक्षित है, अर्थात् सबकी अनुकूलता होने पर शुभ, और प्रतिकूल होने पर प्रतिकूल लक्षण होने पर अशान्ति का वातावरण बना रहता है।

राशियों के अनुसार जैसे – वृष, मिथुन, सिंह एवं मकर राशि वाले लोगों को गाँव के मध्य में अपना घर अथवा निवास नहीं बनाना चाहिए, पूर्व आदि दिशाओं में क्रमशः वृश्चिक – मीन – कन्या –कर्क –धनु –तुला –मेष एवं कुम्भ राशि वालों को अपना निवास नहीं बनाना चाहिए। और अ-क-च- ट- प- य- श ये आठ अ वर्ग आदि पूर्वादि क्रम से आठ दिशाओं के स्वामी हैं। जिसमें अपने से पांचवां शत्रु होता है, शत्रु की दिशा का वास उत्तम नहीं होता है।

इस बात को इस चक्र के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं।

दिशा	मध्य	पूर्व	अग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
निषिद्ध राशि	वृ . मि . सिं . म .	वृश्चिक	मीन	कन्या	कर्क	धनु	तुला	मेष	कुम्भ
वर्ग	-	अ	क	च	ट	त	प	य	श

बृहद्वास्तुमाला के अनुसार ग्रामवास विचार इस प्रकार है – अपने नाम की राशि से दूसरी, पाचवीं, नवीं, दसवीं, ग्यारहवीं राशि वाले ग्राम में निवास करना शुभ होता है अन्य राशि वाले ग्राम में निवास न करें।

अन्य मतों के अनुसार अपने नाम राशि से ग्राम राशि प्रथम, तृतीय, षष्ठ ,सप्तम ,अष्टम, चतुर्थ, द्वादश इन अंकों में हों तो हानि, वैर, एवं रोग का भय होता है।

ग्राम नाम व निवास करने की दिशा के वर्गों के योग में 9 का भाग देने से शेष के क्रम से सूर्य –चन्द्र –भौम –राहु –गुरु –शनि –बुध –केतु –शुक्र ये ग्रह दशा स्वामी होते हैं।

विशेष :- युक्ति के अनुसार उपर्युक्त तीनों के वर्ग क्रम से ही संख्या ग्रहण करनी चाहिए, जैसा कि दिन का रवि, तिथि की प्रतिपदा, राशि की मेष व नक्षत्र की अश्विनी से संख्या ग्रहण करनी चाहिए। यह युक्तियुक्त परम्परा प्रसिद्ध है ,वर्ग के स्वर की संख्या को ग्रहण करना युक्ति हीन है, अत : अवर्गादि क्रम से संख्या – इस प्रकार है

अ = 1, क = 2, च = 3, ट = 4, त= 5, प = 6, य = 7, श = 8 यही संख्या दशा एवं काकड़ी में लेनी चाहिए।

दशा वर्ष प्रमाण – गृहारम्भ कालिक गत नक्षत्र घटी को दशेश के दशावर्ष से गुणा करके भभोग से भाग देने से दशावर्ष भुक्त वर्षादि होगा, यह क्रिया प्रसिद्ध है। दशा वर्ष मान क्रमशः 6 ।10 ।7 ।18 ।16 ।19 ।17 । 7 ।20 वर्षादि है।

पूर्व स्थित स्वगेह – पण्य स्थान (व्यापार स्थान) आराम (बाग) तड़ाग कूप ग्राम इनमें से जो स्थिर अथवा समीप हो ,उससे किसी नूतन स्थान की दशा का आनयन करना चाहिए। गृह –कूप –बाग –तड़ाग प्रभृति किसी के निर्माण में भी एक दूसरे को स्थिर मानकर दशा का आनयन करना चाहिए।

ग्राम निवास फल इस प्रकार भी समझ सकते हैं – नाम की राशि से ग्राम की राशि 4 \ 8 \ 12 हो तो निवास कर्ता के लिए रोग प्रदान करने वाला होता है। 1 \ 7 हो तो वैर होता है, तथा 3 \ 6 संख्या आवे तो हानि होगा उस स्थान परअथवा उस ग्राम में निवास करने पर ऐसा समझना चाहिए।

सूर्यादि ग्रहों के दशा में निर्माण या निवास का फल इस प्रकार जानना चाहिए – सूर्य की दशा में किसी ग्राम या स्थान में कोई निर्माण कार्य करते है तो धन का नाश होता है, चन्द्रमा के दशा में सुख –सम्पत्ति की प्राप्ति होती है, मंगल की दशा में राजभय होता है, बुध की दशा में लक्ष्मी व सुख की प्राप्ति होती है, गुरु की दशा में धर्म की प्राप्ति होती है, शुक्र की दशा में शुभ कार्य की सिद्धि, शनि की दशा में दरिद्रता की बृद्धि होती है, तथा राहु व केतु की दशा में सन्तति पीड़ा होता है ।

ग्रामवास - ग्राम के पूर्व दिशा में मीन – बृश्चिक – कन्या – राशिवालों को नहीं निवास करना चाहिए।

तथा ग्राम के मध्य में – वृष – मिथुन –सिंह – मकर राशि वालों को निवाश नहीं करना चाहिए।

ग्राम के पश्चिम में - मेष तथा तुला राशि वालों को निवाश नहीं करना चाहिए।

दक्षिण दिशा में - कर्क एवं धनु राशि वालों को निवाश नहीं करना चाहिए।

उत्तर दिशा - कुम्भ राशि वालों को धन, पुत्र, एवं अर्थ की इच्छा से निवास नहीं करना चाहिए।

काकिणी विचार –

> स्ववर्गं द्विगुणीकृत्य परवर्गेण योजयेत् ।
> अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिक: स ऋणी भवेत्॥
>
> (वास्तुसारसंग्रह, द्वितीय सोपान श्लोक सं .23)

इसका आशय आपको इस प्रकार समझना चाहिए कि वर्ग कुल आठ होते है – जो निम्नलिखित है, (1) अ, (2) क, (3) च, (4) ट, (5) त, (6) प, (7) य, (8) श, । इन आठों वर्गों में क्रमशः गरुण, विडाल, सिंह, स्वान, सर्प, मूषक, मृग, मेष स्वामी होते हैं। और ये पूर्व आदि आठ दिशाओं के स्वामी भी हैं साथ ही ये वर्ग स्वामी अपने से पाचवें के शत्रु भी होते हैं जैसे - गरुण का शत्रु सर्प है इसी प्रकार आपको शत्रु समझना चाहिए।

अपने- अपने वर्ग को द्विगुणित करके ग्राम या नगर के वर्ग को जोड़कर उस आये हुए योगफल में 8 का भाग देने से जो शेष बचे वही काकड़ी होता है। दोनों की काकड़ी में से जिसकी

काकड़ी की संख्या अधिक हो, वह ऋणी होता है, अर्थात् दूसरे के लिए लाभदायक होता है। जैसे – जितेन्द्र को कृष्ण कुञ्ज नामक स्थान (ग्राम, कालोनी, शहर) में निवास या घर बनवाना है तो इसके लिए काकणी विचार करते हैं इनके लिए कृष्णकुञ्ज में रहना लाभदायक है या हानिकारक है, दायक है इसको समझते हैं।

निवास कर्ता स्थान - कृष्णकुञ्ज

जितेन्द्र का वर्ग = 3 ग्राम वर्ग = 2

3 x 2 = 6 +2 = 8 / 8 = 0 शेष 2 x 2 = 4 + 3 = 7 / 8 = 7 शेष, ग्राम की काकड़ी प्राप्त है।

निवास कर्ता की काकड़ी 0 प्राप्त हुआ। अब यहाँ पर ग्राम की काकड़ी अधिक है इसलिए जितेन्द्र के लिए कृष्णकुञ्ज में निवास करना श्रेयस्कर होगा इसी प्रकार आप को अन्य जगह भी समझना चाहिए।

अन्य प्रकार से ग्रामवास विचार – सेवक अधमर्ण (ऋण गृहीता) युवती व नगर का नक्षत्र क्रमशः स्वामी, धनी (ऋण दाता) भर्ता (पति) व पुर में निवास करने वाले के नक्षत्र से पूर्व या प्रथम हो, तो क्रम से नौकर, धन, पति, व ग्रामवासी की हानि होती है।

यदि गृह पिण्ड व गृहारम्भ का नक्षत्र गृह के मुख्यद्वार के सम्मुख हो तो गृह स्वामी का उद्वास – उच्चाटन व मुख्यद्वार के पीछे हों तो चोरी होती है। अन्यमत-

ग्राम नक्षत्र से नाम नक्षत्र संख्या का फल क्रमशः इस प्रकार जानना चाहिए परन्तु इसमें अभिजित रहित नक्षत्र की गणना करनी चाहिए। तथा चक्र के माध्यम से फल जानेंगे –

स्थान	मस्तक	मुख	कुक्षि	पाद	पृष्ठ	नाभि	गुह्य	हस्त	वामकर
नक्षत्र संख्या	5	3	5	6	1	4	1	1	1
फल	लाभ	धनक्षय	धनप्राप्ति	दरिद्रता	हानि	सम्पत्ति	भयपीड़ा	क्रन्दन	भेद

अभिजित सहित नक्षत्र की गणना क्रम से विचार इस प्रकार है तथा चक्र के माध्यम से फल समझना चाहिए –

स्थान	मस्तक	पृष्ठ	हृदय	पाद
नक्षत्र संख्या	7	7	7	7
फल	धनवान	हानि, निर्धनता	सुख – सम्पत्ति	भ्रमण

विशेष:– गृह – नगर ग्रामादिकों में वास्तु निर्दिष्ट (अपने –अपने) स्थानों में देवता का निवास बताया गया है, अत : देवता के उद्देश्य से पूज्य देव स्थानों में सभी को अपने – अपने अनुकूल देवस्थान में निवास करना बहुत उत्तम होता है। ऐसा समझना चाहिए।

यह मत वराहमिहिराचार्य का है।

नगर – ग्राम, पुर आदि स्थानों में सचिव गृह के समीप निवास से निवास करने से धनानि, धूर्त के समीप निवास से पुत्रवध, तथा देवता के समीप निवास से उद्वेग, एवं चतुष्पद के पास निवास से अपकृति बढती है।

ग्राम या नगर के प्रधान वृक्ष को चैत्य वृक्ष कहते है, उसके समीप निवास से भूतादि पीड़ा होती है ऐसा जानना चाहिए।

2.3 भूमि परीक्षा एवं खात विचार

अभी तक तो आप लोग निवास स्थान , देश- काल- परिस्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त किए अब इस बात को जानते है कि किस प्रकार की भूमि में निवास करना सर्वथा लाभदायक होगा तथा किस प्रकार की भूमि में निवास बनवाना अशुभकर होगा भूमि परीक्षा कैसे करनी चाहिए कि हम यह समझ सकें कि इस भूमि में निवास से मुझे किस प्रकार के फल प्राप्त होंगे। आइए इस बात को समझते हैं –

कटी – फटी, ऊबड़-खाबड़, सशल्य, दीमक से आच्छादित भूमि का सर्वथा त्याग करना चाहिए, अन्यथा गृह स्वामी की आयु व धन की हानि होती है। चूँकि मध्य में सर्वोन्नत और चारों ओर नीची भूमि हो, उसे कुर्म पृष्ठ भूमि कहते हैं ,वहाँ निवास बनवाना श्रेयस्कर नहीं होता है इसका कारण या मतभेद यह है कि मध्यभाग सर्वोत्कृष्ट समुन्नत और चारों तरफ शिखरवत ढाल हो तो निषिद्ध है व पृष्ठ पर जल गिराने से सामान्य रूप से बहाव और उतरते समय प्रपतन का भय न हो साथ ही चारों दिशाओं में प्लवत्व भी हों तो शुभ है।

1) - महर्षि भृगु के अनुसार उत्तर प्लव भूमि ब्राह्मण, पूर्व प्लव भूमि क्षत्रिय ,दक्षिण प्लव भूमि वैश्य, व पश्चिम प्लव भूमि अन्य, तथा सभी दिशाओं में समान प्लव भूमि ब्राह्मणों के लिए अति उत्तम फल को देने वाली होती है।

2)- जहाँ पर मन प्रसन्न हो, आनन्द की अनुभूति हो और देखने से भी प्रसन्नता व सन्तुष्टि हो, उस भूमि पर भी सभी व्यक्ति निवास बना सकते हैं।

3)- जिस भूमि के उपर सुगन्धित मनोहर जयन्ती –जया इत्यादि लतायें, मन को आह्लादित करने वाले वृक्ष हों ,देखने मात्र से स्नेह प्रकट होता हो, तथा आकृति में समान निम्नोन्नत रहित, मूषकादि विवर या किसी प्रकार के दरार (सर्करा) से मुक्त हो, जहाँ पर मार्गजनित श्रम का क्षणिक विश्राम से निराकर व शान्ति सुख की अनुभूति हो, उस भूमि पर निवास बनाकर रहने से सुख-सुविधा व शान्ति शाश्वत बनी रहती है, अर्थात् इसी भूमि हमेशा सुख – सुविधा को प्रदान करने वाली होती है।

भूमि परीक्षण - गृहमध्ये हस्तमितं खात्वा परिपूरितं पुनः स्वभ्रम्।
यन्न्यूनमनिष्टम् तत्समे समं धन्यमधिकं च यच्च ॥

(श्लोक सं . 14 तुरीय सोपान वास्तुसार संग्रह)

भूमि परीक्षण के लिए भूखण्ड के बीच में भूमिपति के हाथ से एक हाथ गहरा, एक हाथ लम्बा, एक ही हाथ चौड़ा बिल्कुल बराबर खात (गड्ढा) खोदकर उसमें से मिट्टी निकाल कर पुनः उस मिट्टी को उसी गड्ढे में भरें, उस गड्ढे के भरने के पश्चात अगर यदि मिट्टी बच जाय तो यह समझना चाहिए कि यह भूमि निवास के लिए उत्तम है, तथा मिट्टी खात को भरने के पश्चात बचे

नहीं बराबर हो जाय तो यह समझना चाहिए कि यह भुमि निवास के लिए मध्यम फल को देनेवाली है। एवं खात भरे नहीं और मिट्टी कम पड़ जाय तो यह जानना चाहिए कि यह भूमि निवास के लिए उत्तम नहीं है इस स्थान पर निवास करना हानिकारक होगा ।

ठीक इसी प्रकार उक्त विधि से खात खोदकर उस गड्ढे को जल से भर दें तथा समान गति से सौ कदम जाकर पुनः आने पर गड्ढे में जल कम नहीं हुआ हों तो यह समझना चाहिए कि यह भूमि बहुत ही उत्तम है तथा यहाँ निवास करना सर्वथा लाभदायक होगा। अन्य मतानुसार गड्ढे को जल से पूरित करने के बाद शत निमेश अर्थात् 40 मिनट के बाद यदि गड्ढे का जल स्थिर है तो भी वह भूमि लाभदायक ही है ऐसा जानना चाहिए। भूमि परिक्षण के सन्दर्भ में अन्य विचार और भी है जो निम्नलिखित है –

1)- उक्त विधि से गड्ढे का निर्माण करके उस गड्ढे को गाय के गोबर से लीपकर उसके अन्दर वर्णो के अनुसार मिट्टी के चार दीपक चरों कोणों में स्थापित करें तथा मानसिक निर्धारण करें कि यह दीपक इस वर्ण के लिए है। एवं दीपक में घी रहते हुए जिस वर्ण वाला दीपक मलिन होकर बुझ जाय तो यह समझना चाहिए कि उस वर्ण के लिए वह भूमि लाभदायक नहीं है।

2) उक्त विधि से गड्ढे का निर्माण करके उस गर्त के चारों कोणों में चार फूल वर्णों के अनुसार रखें तथा सुबह उठकर देखें कि कौन सा वर्ण वाला फूल मलिन (मुरझाया हुआ) है जिस वर्ण का फूल मलिन हुआ होगा उस वर्ण के निवास के लिए वह भूमि उत्तम नहीं है, एवं जिस वर्ण का मलिन नहीं हुआ है उसके लिए वह भूमि निवास करने योग्य है।

3) भूमि की खुदाई में यदि हड्डी, कोयला इत्यादि मिले तो ऐसे भूमि पर भवन नहीं बनाना चाहिए। यदि खुदाई में ईंट-पत्थर निकले तो ऐसा भूमि लाभ देनेवाली होती है। भूमि का परीक्षण बीज उगा कर भी किया जाता है, जिस भूमि पर वनस्पति समय –समय पर उगता रहे एवं बीज समय पर अंकुरित होता हो तो इस प्रकार की भूमि अच्छी मानी जाती है।

4) भूमि परीक्षण में भूमि के आकार का भी विचार किया जाता है, इसलिए वर्गाकार भूमि सर्वोत्तम होता है, आयताकार भी शुभ होता है, सिंह मुखी – गोमुखी भू खण्ड भी उत्तम होता है निवास के लिए गोमुखी एवं व्यापार के लिए सिंह मुखी उत्तम समझना चाहिए।

खात विचार – सूर्य के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक अभिजित सहित गड़ना करने पर 7 नक्षत्र अशुभ, उसके बाद 8 से 18 वे नक्षत्र तक शुभ, उसके बाद 19 वे नक्षत्र से 28 नक्षत्र तक अशुभ समझना चाहिए।

सूर्य के नक्षत्र से	3	4	4	3	4	3	4	3
अंग	मस्तक	अग्रपाद	पृष्ठ पाद	पृष्ठ	दक्षिण कुक्ष	पुच्छे	वामकुक्षे	मुखे
फल	दाह	शून्य	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	दरिद्रता	पीड़ा

ए सभी विचार गृहारम्भ में किया जाता है आप को गृहारम्भ में खात की दिशा का निर्णय सूर्य की राशि के अनुसार करना चाहिए इसमें देवालय में, गृहारम्भ में, जलाशय में सूर्य की राशि के अनुसार राहु का मुख तथा खात की दिशा का निर्धारण इस प्रकार समझना चाहिए जो निम्नलिखित चक्र से सरलता से कर सकेंगे –

संक्रांति	विवाह में सूर्य	देवालय में सूर्य	गृहारम्भ में सूर्य	जलाशय में सूर्य	खात की दिशा	राहु मुख
सूर्य	वृष, मिथुन, कर्क	मीन ,मेष, वृष	सिंह, कन्या ,तुला	मकर ,कुम्भ, मीन	आग्नेय	ईशान
सूर्य	कुम्भ, मीन, मेष	धनु, मकर, कुम्भ	वृष, मिथुन, कर्क	तुला, वृश्चिक, धनु	नैऋत्य	आग्नेय
सूर्य	वृश्चिक ,धनु, मकर	कन्या ,तुला ,वृश्चिक	कुम्भ, मीन, मेष	कर्क, सिंह, कन्या	वायव्य	नैऋत्य
सूर्य	सिंह, कन्या, तुला	मिथुन, कर्क, सिंह	वृश्चिक, धनु, मकर	मेष, वृष, मिथुन	ईशान	वायव्य

2.3.1 शल्यानयन प्रकार

जिस भूमि पर घर बनवाना हो उस भूमि पर अगर यदि वाल्मीक या दीमक लगें हों, वहाँ पर गृह निर्माण से गृहपति को रोग होता है ,तथा जहाँ पर उसर हो, कटी – फटी भूमि हो, वहाँ पर भी गृह निर्माण नहीं करना चाहिए। ठीक इसी प्रकार जहाँ पर शल्य हो, वह भूमि दुःखदायी होती है, इसीलिए भूमि को खोदकर शल्य विहीन किया जाना चाहिए तथा शल्य युक्त भूमि में गृह कभी नहीं बनवाना चाहिए। और विचार इस प्रकार है –

ग्राम एवं दिशा की स्वर संख्या में प्रश्न संख्या में प्रश्न कर्ता के नाम अक्षरों का योग कर के 7 से गुणा करें और 4 से भाग दें, जी शेष आवे उससे फल को समझें, 1 शेष हो तो भूमि उत्तम है, 2 शेष बचे तो भूमि सोई हुई है, 3 शेष बचे तो भूमि मृत है तथा 4 शेष बचे तो भूमि का प्रभाव शून्य है ऐसा जानना चाहिए।

नाम – ग्राम – दिशा व प्रश्न स्वर के वर्ग की स्वर संख्याओं के योग में तीन का भाग दें, 1 शेष बचे तो जीवित, 2 शेष बचे तो मृत, 3 शेष बचे तो शून्य फल जानना चहिए। अर्थात् 1 शेष होने पर ही निवास करने योग्य भूमि है ऐसा जानना चाहिए इसका आशय आप को यह समझना चाहिए कि मृत भूमि अथवा सोई हुई भूमि अथवा शून्य भूमि व शल्य युक्त भूमि में अपना निवास अथवा घर नहीं बनवाना चाहिए।

शल्य ज्ञान के लिए प्रश्न विधि – जिस भूमि पर निवास बनाना हो एवं शल्य (हड्डी) का पता लगाना हो कि यहाँ शल्य है या नहीं इसके लिए सर्व प्रथम उस भमि पर जाकर अपने इष्ट देव

का स्मरण करके गणपति आदि दिक्पालों का सम्यक पूजन करके वर्णों के अनुसार प्रश्न करने का विधान है जैसे – ब्राह्मण को फूल का नाम रखना चाहिए, क्षत्रिय को नदी का नाम, वैश्य को फल का नाम व अन्य सभी को देवता का नाम उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार प्रश्न के प्रथम अक्षर एवं वर्ण अक्षरों के अनुसार शल्य किस स्थान पर है इसका निर्देश इस प्रकार समझना चाहिए –

1) प्रश्न का पहला अक्षर यदि अ या आ से है तो अभीष्ट भूमि के पूर्व भाग में डेढ़ हाथ के नीचे मनुष्य की हड्डी है, इसमें निवास करने से मनुष्य की मृत्यु होती है।

2) यदि प्रथम अक्षर " क" हो तो अग्निकोण में दो हाथ नीचे शश (खरगोस) की हड्डी है ऐसा जानना चाहिए, इसमें निवास करने से राजदण्ड का भय हमेशा बना रहता है ।

3) यदि प्रश्न अक्षर " च " है तो एक कमर नीचे दक्षिण भाग में मनुष्य का शल्य समझना चाहिए, यहाँ पर घर बनवाने से गृह स्वामी की मृत्यु होती है ऐसा जानना चाहिए।

4) " ट " प्रश्न में नैऋत्य कोण में डेढ़ हाथ नीचे कुत्ते की हड्डी है ऐसा जानना चाहिए, तथा इसका फल यह होता है कि यहाँ पर बालकों की मृत्यु होती है।

5) " त " प्रश्न में पश्चिम भाग में शिशु का शल्य डेढ़ हाथ नीचे है, इसमें कर्ता का उच्चाटन होता है।

6) " प " प्रश्न में वायव्य कोण में तुष – कोयला भस्म चार हाथ नीचे है, इसमें मित्र द्रोह व दुःस्वप्न दिखाई देता है।

7) यदि प्रश्न का प्रथम अक्षर " य " हो तो भूभाग के उपर भाग में शल्य है, इसमें धन व का अभाव रहता है, इसमें निवास करनेवाला हमेशा परेशान रहता है ।

8) " श " प्रश्न में ईशान कोण में डेढ़ हाथ नीचे गाय का शल्य समझना चाहिए, इसमें पशुओं का नाश होता है, ह य प इन तीनों अक्षरों के प्रश्न में पूर्व – प्रतिपादित दिशाओ के अतिरिक्त भूमि के मध्य भाग में भी वक्षस्थल मात्र नीचे राख – भस्म – लोहा इत्यादि है, इसका फल कुल का विनाश समझना चाहिए।

भूमि में शल्य (हड्डी) है या नहीं – इस बात का पता करने के लिए भूमिस्वामी द्वारा प्रश्न कराया जाता है तथा उनके प्रश्न के अक्षर को 3 से गुणा करें तथा मात्राओं को 4 से गुणा करके उस योगफल में 9 का भाग दें, यदि विषम अंक शेष बचे तो यह समझना चाहिए कि भूमि में हड्डी है, अगर यदि सम अंक शेष बचे तो भूमि में शल्य नहीं है ऐसा कहना चाहिए।

॥ दिशाज्ञान बोधकचक्र ॥

प फ ब भ म (ईशान कोण)	अ ई उ ऋ ळ ल्री (पूर्व दिशा)	क ख ग घ ङ. (आग्नेय कोण)
श ष स ह (उत्तर दिशा)	य र ल व (मध्य में)	च छ ज झ ञ (दक्षिण दिशा)
त थ द ध न (वायव्य कोण)	ए ऐ ओ औ (पश्चिम दिशा)	ट ठ ड ढ ण (नैऋत्य कोण)

इस चक्र के अनुसार आप इस प्रकार शल्य के बारे में पता लगा सकते है कि जो भी गृह स्वामी हो उससे देवता, पुष्प तथा वृक्ष का नाम लेने को कहें, उनके द्वारा कहे गये शब्दों के पहला अक्षर जिस कोष्टक में हो उस दिशा में शल्य होगा ऐसा बताना चाहिए।

उक्त बताये हुए नियमों के अनुसार अ क च ट ए त श प य वर्ग पूर्व आदि दिशा में समझें, प्रश्न का अक्षर जिस कोष्टक में हो उस दिशा में शल्य समझना चाहिए, अथवा केश –कोयला –लकड़ी –लोहा आदि होता है

इसके रहते गृह निर्माण न करें, अत: भूमि शोधन परम आवश्यक है।

शल्य आदि का फल – गाय का शल्य राज भय प्रदान करता है, घोड़े का रोग, कुत्ते का कलह तथा विनाश, गधा एवं ऊँट का हानि, मनुष्य का सन्तति नाश और बकरे का अग्निभय करता है।

2.3.2 गृह के समीप शुभाशुभ वस्तु

सर्व प्रथम हम बात करें तो वास्तुशास्त्र में वेध अर्थात् भवन वेध दरवाजे इत्यादि का वेध नहीं होना चाहिए, साथ ही मुख्य दरवाजे के सामने सीधा कोई रोड नहीं होना चाहिए, मुख्यद्वार के सामने गढ्डे अथवा कीचड़ भी नही होने चाहिए, नाला इत्यादि नहीं होना चाहिए इससे मकान के स्वामी को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मुख्यद्वार के सामने कुआ नहीं होना चाहिए, ठीक इसी स्थान पर स्तम्भ इत्यादि हों तो पत्नी बीमार रहेगी। अगर यदि मन्दिर के पास घर हो तथा उसकी छाया मकान पर आती हो तो भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मुख्यद्वार या घर के सामने सीढी नहीं बनवाना चाहिए, द्वार के उपर द्वार होना भी लाभदायक नही होता है। घर के उपर पड़ रही छाया से छाया वेध होता है, परन्तु यह देखना होता है कि घर के उपर किसकी छाया पड़ रही है और किस दिशा से, और किस प्रहर में छाया घर पर आती है, उसी से लाभ हानि का पता लगाया जा सकता है। घर के समीप काटेंदार वृक्ष और दूध वाले वृक्ष हों तो वहाँ दरिद्रता निवास करती है।

जिस घर में नीम, वट, पीपल, आम, केला, तगर, गूलर, कटहल, जटामासी, भिलावा, कदम्ब अथवा खदिर का वृक्ष हो वहाँ दरिद्रता निवास करती है।

शिविर में वन्य वृक्ष, वटवृक्ष, सेमल, इमली, खजूर और काटेंदार वृक्ष निषिद्ध है। वटवृक्ष से चोरभय और सेमल से राजाओं को दुःख होता है। इमली का वृक्ष विद्या बुद्धि का विनाश तथा हमेशा दुःख दायी होता है उससे निश्चय ही प्रजा और धन की हानि होती है खजूर और काटेंदार वृक्ष विद्या और बुद्धि को नष्ट करने वाले होते है।

मकान के पास पीपल का वृक्ष हो तो जहाँ तक उसकी छाया जाती है वहाँ तक अच्छा नहीं करता है। इस दोष की निवृत्ति के लिए वृक्ष के चारों ओर ईंट की दीवार बना देनी चाहिए और प्रतिदिन उसका पूजन करना चाहिए (जल देना और दीपक जलाना आदि) करना चाहिए।

मकान के पूर्व में पीपल ,दक्षिण में पाकड़ पश्चिम में बड़ और उत्तर में गूलर का वृक्ष नहीं लगाना चाहिए पीपल से अग्नि भय, पाकड़ से आयु हानि, बड़ से शस्त्राघात और गूलर से नेत्र रोग होता है। पीपल के देवता सूर्य, पाकड़ के देवता यम, बड़ के देवता वरुण और गूलर के देवता प्रजापति ब्रह्मा होते हैं। अनुपयुक्त स्थान पर लगे हुए वृक्षों को उखाड़ कर उपयुक्त स्थान पर लगा देना चाहिए और उन वृक्षों से सम्बन्धित देवता का पूजन करना चाहिए।

(गोभिल गृह्य सूत्र 4 ।7 ।22 । 26)

घर के विल्कुल सामने मुख्यद्वार पर कोई भी वृक्ष नहीं होना चाहिए यह सभी कार्यों में बाधा उत्पन्न करता है। कौन सा वृक्ष घर के किस दिशा में होना चाहिए इसका विचार अवश्य करना चाहिए।

ग्राह्य वृक्ष – अशोक, महुआ, साखू, असना, चन्दन, देवदारु, शीशम, श्रीपर्णी, तिन्दुकी, कटहल, खदिर, अर्जुन, शाल और शमी इन वृक्षों की लकड़ी शुभ फल देने वाली होती है।

धनदायक शीशम, श्रीपर्णी, तिन्दुकी, के काष्ट को अकेले ही लगावें, अन्य किसी काष्ट के साथ सम्मिलित करने पर ये मंगलकारी नहीं होते। इसी तरह धव ,कटहल ,चिड़, अर्जुन, पद्म वृक्ष भी अन्य काष्टों के साथ सम्मिलित होने पर गृहकार्य के लिए शुभ दायक नहीं होते हैं।

शहतीर, चौखट, दरवाजे – खिडकियां – खूँटी ,फर्नीचर आदि के निर्माण में निषिद्ध (त्याज्य) वृक्षों की लकड़ी काम में नहीं लेनी चाहिए।

शैया – पलंग के निर्माण में श्रीपर्णी धनदायक, आशन रोगनाशक शीशम वृद्धिकारक , सागवान कल्याणकारक, पद्मक आयुप्रद, चन्दन शत्रुनाशक सुखदायक और शिरीष श्रेष्ठ है।

वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन के पास मुख्य मार्ग नहीं होना चाहिए अथवा मुख्य मार्ग से घर की कुछ दुरी होना अच्छा माना गया है। चूँकि घर के पास सड़क का होना खुशी और गम दोनों तरह की परिस्थिति उत्पन्न करता है इस बात को वास्तुशास्त्र के अनुसार समझते है।

1) किसी व्यक्ति के घर के सिर्फ एक तरफ अर्थात् पूर्व की ओर सड़क गुजरती हो तथा पश्चिम – उत्तर और दक्षिण दिशा की ओर मार्ग विल्कुल बन्द हो तो वह घर अत्यन्त शुभ फल प्रदान करने वाला होता है ,ऐसा माना जाता है कि मकान में रहने वाला बहुत ही सुखी जीवन यापन करता है तथा उनके उपर माता लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है।

2) वास्तु के अनुसार ऐसे जातक जिनका घर ऐसे स्थान हो, जहाँ उत्तर दिशा में सड़क हो, तथा अन्य तीन दिशा, पश्चिम, दक्षिण और पूर्व दिशा बन्द हो तो यह गृह स्वामी के लिए काफी शुभ संकेत है। वास्तु में ऐसे घर को अत्यन्त उपयोगी माना जाता है।

3) वास्तु शास्त्र के अनुसार जिसका घर ऐसे स्थान पर हो, जहाँ सामने से दक्षिण दिशा की ओर सड़क जाती हो, अर्थात् अन्य दिशा पूर्व –पश्चिम – उत्तर दिशा के ओर का मार्ग बन्द हो तो यह भी उत्तम स्थिति है वास्तुशास्त्र में इसको भी शुभ दायक माना गया है।

4) जिस व्यक्ति के मकान के सामने पश्चिम दिशा की ओर सड़क जाती हो तथा अन्य तीनों दिशाओं, पूर्व – उत्तर –और दक्षिण दिशा में मार्ग बन्द हो तो ऐसे स्थान में मकान बना हुआ घर के मालकिन एवं मालिक के लिए अत्यन्त शुभदायक होता है तथा उनके हाथों से यश होता है।

5) वास्तु के अनुसार जिनके घर के पास उत्तर –दक्षिण में सड़क होती है, पूर्व एवं पश्चिम दिशा बन्द रहता है , अथवा किसी के घर के पूर्व – पश्चिम और दक्षिण में मार्ग हो तो यह परिस्थिति भवन स्वामी के लिए दुःख -दायी होता है वास्तु के अनुसार अच्छा तो यही होगा कि ऐसे स्थान पर भवन निर्माण न करें, अथवा इसकी शान्ति करवानी चाहिए।

2.3.3 मुख्यद्वार विचार

मुख्यद्वार का आशय आप को इस प्रकार समझना चाहिए – चूंकि गृह का प्रमुख प्रवेशद्वार गृह का मुख होता है,

अत : इसका विशेष महत्व होता है इसकी स्थापना का सामान्य नियम यह है कि जिस दिशा में द्वार रखना हो, उस दिशा का 9 भाग करना चाहिए। भूमि अथवा गृह के अन्दर के तरफ मुख करके खड़ा होना चाहिए, दाहिनी ओर से 5 भाग एवं बायीं ओर से 3 भाग छोड़कर शेष में द्वार की स्थापना करनी चाहिए - मुख द्वार की स्थापना में कुछ विचारणीय तथ्य इस प्रकार है –

आवासीय गृह के मध्य में प्रमुख द्वार नहीं होना चाहिए। प्रमुख द्वार कोणों में भी नहीं बनाना चाहिए। मुख्यद्वार स्थापित करते समय यह भी ध्यान देना चाहिए कि उससे वास्तुमण्डल की शिरायें एवं वंश (वास्तुमण्डल की रेखायें) तथा वास्तुमण्डल के मर्म स्थल विद्ध न हो, साथ द्वार इस प्रकार निर्मित हो, जिससे गृह की नाली द्वार के मध्य से प्रवाहित हो। गृह के द्वार अपने -आप खुलना और बन्द होना अशुभकर बताया गया है, इससे कुल का नाश सम्भव होता है, द्वार को नियमानुसार ही बनाना चाहिए अधिक बड़ा द्वार राजकुल से भय एवं छोटा द्वार चोरों से भय प्रदान करता है। द्वार की आकृति प्रशस्त होनी चाहिए, मृदंग की आकृति वाला, बीच में बहुत चौड़ा, कुबड़ा द्वार, द्वार पर चौखट का बहुत बोझ होना, भीतर की ओर झुका होना, बाहर की ओर निकला होना, सही दिशा का न होना आदि निर्माण गत दोष है। जिस प्रकार प्रमुख द्वार की सज्जा हो, उस प्रकार अन्य द्वारों की सज्जा नहीं होनी चाहिए। गृह के मुख्यद्वार की सजावट, कलश, श्रीफल, पत्र, सुन्दर स्त्री, तथा अन्य सुन्दर आकृतियों से करनी चाहिए। मुख्यद्वार के सामने सम्मुख जिस देवी – देवता की पीठ, रूद्र एवं सूर्य की प्रतिमा के सम्मुख, वासुदेव का वाम भाग एवं ब्रह्मा का दाहिना भाग नहीं होना चाहिए।

द्वार दिशा – यदि गृह की आय ध्वज हो तो पूर्व दिशा में अथवा गृह करता के इच्छानुसार किसी भी दिशा में द्वार निर्माण किया जा सकता है। सिंह आय होने पर पूर्व –दक्षिण – या उत्तर दिशा में द्वार निर्माण कर सकते हैं। गज आय होने पर पूर्व या दक्षिण दिशा में, तथा वृष आय होने पर पश्चिम दिशा में द्वार स्थापित करना चाहिए।

इसी प्रकार वायस आय होने पर पूर्व दिशा, धूम आय होने पर दक्षिण दिशा, स्वान आय होने पर पश्चिम दिशा, एवं खर आय होने पर उत्तर दिशा ग्रहण करना चाहिए।

सूर्य की राशि के अनुसार द्वार – सूर्य के कर्क – सिंह – मकर एवं कुम्भ में होने पर गृह का द्वार पूर्व मुख या पश्चिम मुख होना चाहिए। मेष –वृष – तथा तुला एवं वृश्चिक के सूर्य में उत्तर एवं दक्षिण में गृह का द्वार रखना चाहिए।

तिथि के अनुसार भवन का द्वार- गृह का निर्माण पूर्णिमा से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक करें तो पूर्व दिशा में गृह का मुख नहीं होना चाहिए, कृष्ण पक्ष की नवमी से चतुर्दशी के मध्य गृहारम्भ होने पर उत्तर मुख गृह नहीं बनाना चाहिए, अमावश्या से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक गृहारम्भ करने पर पश्चिम दिशा में, एवं शुक्ल पक्ष की नवमी से चतुर्दशी पर्यन्त गृहारम्भ करने पर दक्षिण दिशा में गृह का मुख नहीं रखना चाहिए।

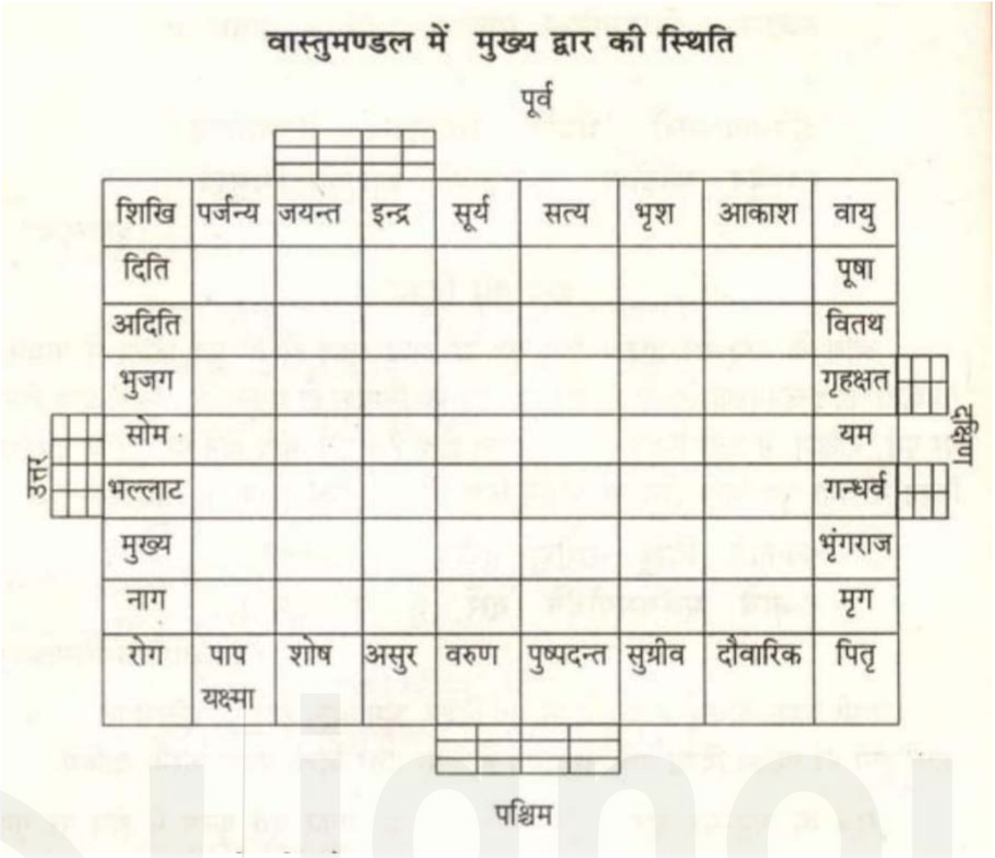

1- बायीं ओर से चौथा पद।

2– पूर्व में तीसरा, दक्षिण में छठां, पश्चिम में पाचवां एवं उत्तर में पाचवां पद भी मतान्तर से द्वार के लिए उपयुक्त है।

चन्द्रमा तथा नक्षत्र के अनुसार द्वार निर्णय – कृतिका आदि सात - सात नक्षत्रों को क्रमशः पूर्व आदि दिशाओं में स्थापित करना चाहिए । गृह का नक्षत्र एवं चन्द्रमा द्वार के पास में रहें, इस प्रकार द्वार स्थापना करना चाहिए, गृह एवं चन्द्रमा का नक्षत्र गृह के अग्र एवं पृष्ठ भाग में हो तो गृह एवं गृह स्वामी दोनों नष्ट हो जाते हैं।

वर्ण के अनुसार गृह द्वार - ब्राह्मण राशि (कर्क, मीन, वृश्चिक,) राशि वालों का गृह मुख पूर्व दिशा में, क्षत्रिय राशि (सिंह – मेष – धनु) राशि वालों का गृह का द्वार उत्तर दिशा में होना चाहिए, वैश्य राशि (कन्या –मकर – वृष) राशि वालों का गृह द्वार दक्षिण दिशा में होना चाहिए, एवं शुद्र राशि (मिथुन – कुम्भ – तुला) राशिवालों के भवन का मुख्यद्वार का मुख पश्चिम दिशा में होना चाहिए। मत्स्यपुराण के अनुसार ब्राह्मण राशि वालों का गृह का द्वार उत्तर मुख एवं क्षत्रिय राशि वालों का गृह पूर्वमुख होना चाहिए, एक अन्य मत के अनुसार ब्राह्मण राशि के गृह कर्ता के लिए सभी दिशाओं में अपना गृह मुख रख सकते हैं।

वास्तुपद के अनुसार द्वारफल – वास्तुमण्डल के चारों दिशाओं में कहीं भी गृहकर्ता भवन के मुख्यद्वार का निर्माण करा सकता है, किन्तु वास्तु पदों में स्थित देवों के अनुसार उन द्वारों के परिणाम अलग – अलग कहे गये हैं। गृह स्वामी को वास्तुपद के अनुसार द्वारफल का विचार करने के पश्चात ही मुख्यद्वार स्थापित करना चाहिए। दिशा एवं वास्तुपद के अनुसार द्वारफल इस प्रकार है –

पूर्व द्वार –		वास्तुपद	द्वारफल
वास्तुपद	द्वारफल	सूर्य	क्रोध
शिखी	अग्निभय	सत्य	नृपत्व की प्राप्ति
पर्जन्य	कन्याओं का जन्म	भृश	क्रूरता
जयन्त	अत्यधिक धन	आकाश	चोरी
इन्द्र	राजा के समान		

दक्षिण द्वार		पश्चिम द्वार	
वास्तुपद	द्वारफल	वास्तु पद	द्वारफल
वायु	कम पुत्र	पितृ	पुत्र कष्ट
पूषा	दासता दौवारिक	शत्रु वृद्धि	
वितथ	निम्नता सुग्रीव	धन एवं पुत्र की अप्राप्ति	
गृहछत	भोजन, पान एवं पुत्र वृद्धि	पुष्पदन्त	पुत्र एवं धन की प्राप्ति
यम	भयानकता, अशुभता	वरुण	धन सम्पत्ति
गन्धर्व	कृतघ्नता	असुर	राज भय
भृंगराज	धनहीनता	शोष	धन नाश
मृग	पुत्र एवं धन का नाश	पापयक्ष्मा	रोगभय

॥ उत्तर द्वारफल विचार॥

वास्तुपद	द्वारफल
रोग	वध एवं वन्धन
नाग	शत्रु वृद्धि
मुख्य	पुत्र एवं धन का लाभ
भल्लाट	सभी प्रकार के गुण सम्पत्ति
सोम	पुत्र एवं धन का लाभ
भुजंग	पुत्र से वैर
अदिति	स्त्रियों में दोष
दिति	निर्धनता

इस प्रकार बृहत्संहिता में चारों दिशाओ के द्वारफल वर्णित है। कहीं –कहीं कुछ द्वार फलों के विषय में विद्वानों में मतभेद भी प्राप्त होते है। साथ ही द्वार का प्रमाण आपको इस प्रकार जानना चाहिए। गृह के विस्तार के 11 वें भाग में 70 जोडकर जो संख्या प्राप्त हो उतनी प्रमुख द्वार की उचाई रखनी चाहिए , तथा द्वार की चौड़ाई द्वार की उचाई की आधी होनी चाहिए ।

2.3.4 द्वार-वेध विचार

प्रमुख द्वार के सम्मुख द्वार वेध नही होना चाहिए आप को द्वार वेध का कारण इस प्रकार समझना चाहिए जैसे – मुख्यद्वार के सामने राज मार्ग, कोण, वृक्ष, स्तम्भ, कूप, कीचड़ ,या गन्दी नाली, नहीं होनी चाहिए। देवता तथा ब्रह्म-वेध नहीं होना चाहिए (ब्रह्मा अथवा किसी मनुष्य की प्रतिमा) द्वार सम्मुख नहीं होना चाहिए। किन्तु उपयुक्त कारण द्वार के उचाई की द्विगुणित भूमि छोड़कर स्थित हों तो द्वारवेध का निदान भी हों जाता है अर्थात् द्वारवेध दोष नहीं

लगता है। द्वार वेध निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है –

कूपवेध- मुख्यद्वार के सामने आनेवाली भूमिगत पानी टंकी, बोर, कुआँ, शौच कूप आदि कूप वेध होते हैं और धन हानि का कारण भी बनते है।

स्तम्भवेध – मुख्यद्वार के सामने टेलीफोन, विजली का खम्भा, डीपी आदि होने से उस घर में निवास करने वालों के मध्य में परस्पर विचारों में मतभेद इत्यादि होता है। जो उनके विकास में बाधक साबित होता है।

स्वर वेध – द्वार के खुलने या बन्द होने में आने वाली आवाज स्वर वेध कहलाता है जिसके कारण आकस्मिक अप्रिय घटना का संकेत प्राप्त होता है इसको ठीक रखना चाहिए।

ब्रह्मवेध – मुख्यद्वार के सामने कोई तेलघानी, चक्की, धार तेज करनेवाली मसीन, आदि लगी हो तो ब्रह्म वेध कहलाती है, इसके कारण जीवन अस्थिर व निवासियों में मनमुटाव होता है।

कीलवेध – मुख्यद्वार के सामने गाय – भैस – कुत्ते आदि को बाँधने के लिए खूंटी को कील वेध समझना चाहिए, यह भी निवासियों के विकास में बाधक होता है।

वास्तु वेध – द्वार के सामने बना गोदाम ,स्टोर रूम, गैराज, आउट हॉउस, आदि वास्तु वेध कहलाता है, जिसके करण सम्पत्ति का नाश होता है, मुख्यद्वार के समक्ष कीचड़, पथर इत्यादि का ढेर निवासियों के विकास में वाधक होता है। मुख्यद्वार के सामने लीकेज आदि से एकत्रित पानी जमा रहने से बच्चों के लिए हानिकारक होता है, मुख्यद्वार के सामने कोई अन्य निर्माण का कोना अथवा दूसरे दरवाजे का हिस्सा नहीं होना चाहिए, मुख्यद्वार के ठीक सामने दूसरा उससे बड़ा मुख्यद्वार जिसमें पहला मुख्यद्वार पूरा अन्दर आ जाता हो तो छोटे मुख्यद्वार वाले के भवन में समाहित हो जाता हो तो इस स्थिति में छोटे मुख्यद्वार वाला भवन वहाँ के निवासियों के लिए अमंगलकारी रहता है।

भवनवेध - मकान से ऊँची चारदीवारी होना भवन वेध कहलाता है, जेलों के अतिरिक्त यह अक्सर नहीं होता है यह भी आर्थिक विकास में वाधक होता है। दो मकानों का संयुक्त प्रवेशद्वार नहीं होना चाहिए यह स्थिति एक मकान के लिए अमंगलकारी होता है, मुख्यद्वार के सामने कोई पुराना खण्डहर आदि उस मकान में निवास करने वालों के लिए दैनिक हानि और ब्यापार – धन्धे बन्द होने के सूचक है।

छाया वेध – किसी वृक्ष, मन्दिर, ध्वजा, पहाड़ी आदि की छाया प्रात: 10 बजे से सायं 3 बजे के मध्य मकान पर पड़ने को छाया वेध कहते हैं। यह निम्न पांच तरह की हों सकती है।

मन्दिर छाया वेध – भवन पर पड़ रही मन्दिर की छाया शान्ति की प्रतिरोधक व ब्यापार व विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है बच्चों के विवाह में देर व वंशवृद्धि पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

ध्वजछायावेध - ध्वज, स्तूप, समाधि या खम्भे की छाया के कारण निवासियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

वृक्षछाया वेध – भवन पर पड़ने वाली वृक्ष की छाया निवासियों के विकास को प्रभावित करती है।

पर्वत छाया वेध – मकान के पूर्व में पड़ने वाली पर्वत की छाया निवासियों के जीवन में प्रतिकूलता के साथ ख्याति को भी प्रभवित करता है।

भवन कूप छाया वेध – मकान के कुएं या बोरिंग पर पड़ रही भवन की छया धन – हानि की द्योतक है।

भूमि की आकृति के सदृश गृह की प्रशस्त आकृति आयताकार, चौकोर, भद्रासन अथवा वृताकार होती है। इसके अतिरिक्त शेष आकृतियाँ गृह निर्माण में वर्जित है। प्रशस्त गृह में सूर्य वेध एवं चन्द्र वेध भी विचारणीय तथ्य है। पूर्व पश्चिम दीर्घ भवन सूर्य वेधी तथा उत्तर – दक्षिण गृह चन्द्र वेधी होते है। चन्द्र वेध से युक्त गृहों को आवास की दृष्टि से उत्तम माना गया है।

जिस भवन में आगे – पीछे की दीवार में बनाये गये द्वार विद्ध (आमने –सामने) हों तो वह भिन्न वास्तु कहलाता है। वह गृह स्वामी के लिए शुभ कारक नहीं होता है, तथा उस घर में स्थापित वस्तु की वृद्धि नही होती है।

2.4 सारांश

वास्तुशास्त्र की अवधारणा मुख्य रूप से गृह निर्माण के कार्य आरम्भ करने से पूर्व यदि इसके नियमों का अच्छे तरह से पालन किया जाय तो यह गृह स्वामी के लिए हितकारक होता है एक अच्छे वास्तु का निर्माण भवन स्वामी को सुख –समाधान तथा शान्ति प्रदान करता है। उपयुक्त वास्तु का निर्माण करने से पूर्व मुख्य रूप से इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। उपयुक्त दिशा का निर्धारण, उपयुक्त भूमि का चयन, उपयुक्त दिशाओं में रचना विन्यास का क्रम, साथ ही वास्तु का आकार एवं आयु तथा मजबूती आदि। जब गृह (अथवा मकान) का मानव जीवन से इतना महत्वपूर्ण स्थान है तो उसके स्वामी अथवा निवासी के लिए सुख समाधान दायक तो होना ही चाहिए साथ ही निर्दोष भी रहना चाहिए यदि वास्तु (गृह अथवा भवन) दोष युक्त होगी तो उससे निवासी को विपरीत फल की प्राप्ति होती है, तथा वह व्याकुल हो उठता है जीवन के हर क्षेत्र में नियम पालन की आवश्यकता होती है, जब भी नियमों की मर्यादा लांघी जाती है तो उसके दुष्परिणाम अवश्य ही देखने को मिलते है शासन के नियम भंग होने पर शासन दंडित करता है प्रकृति विरुद्ध कार्य करने पर प्रकृति दंडित किए बिना नहीं रहती, ठीक इसी भांति वास्तुशास्त्र के अवधारणा के विपरीत यदि वास्तु निर्माण किया जाता है तो उससे भी अनेकानेक विपदाओं का सामना करना पड़ता है।वर्तमान युग में मनुष्य वास्तुशास्त्र से सामान्यतया अनभिज्ञ है। शास्त्र के नियमों को ध्यान में रखे बिना जो भव्य विशाल इमारत बनाई जाती है, उनके उपयोग कर्ता अनजाने में ही कष्ट पाकर खिन्न हो जाते हैं। जिसप्रकार अच्छे भोजन को कुदृष्टि से देखने पर उसके स्वाद में परिवर्तन होकर विषाक्त हो जाने के कारण त्याज्य है उसी भांति दोषपूर्ण नियम पूर्वक निर्मित वास्तु विशाल एवं आकर्षक होने पर भी अंततः दुखदायक ही होता है अतएव यह आवश्यक है कि निर्माण की जाने वाली वास्तु, वास्तुशास्त्र के नियमों को ध्यान में रखकर बनाई जाय तो बहुत ही उत्तम होगा। यही वास्तुशास्त्र की मूल अवधारणा है मुझे आशा है की इस पाठ के अध्ययनोपरांत आप को वास्तु के नियमों के अनुसार ही भवन निर्माण करायेंगे तथा जन कल्याण करेंगे।

2.5 शब्दावली

आकर्षक = आकर्षित करने वाला,

वेध	=	वाधा, अवरोध
शल्यानयन	=	भूमि से हड्डी निकलने की विधि
प्लव	=	ढलान
राजदण्ड	=	राजा के द्वारा दण्डित होना (प्रशासनिक समस्या)
सिंहमुखी	=	एसी भूमि जो की आगे चौड़ाई में अधिक हो
गोमुखी	=	एसी भूमि जो आगे पतला पीछे चौड़ाई हो
मुरझाना	=	मलिन होना
भूपति	=	जमीन का मालिक
सर्वोन्नत	=	सबसे ऊँची भूमि
सेवक	=	दास
उच्चाटन	=	पागलपन
शल्य	=	हड्डी
रखरखाव	=	देखभाल
जन्मना	=	जन्म से
संस्कारात	=	संस्कार से
वेदपाठी	=	वेद पढने वाला
स्ववर्गं	=	अपने वर्ग को
द्विगुणी	=	दोगुना
परवर्गेण	=	दूसरे के वर्ग में
योजयेत	=	जोड़ना चाहिए
अष्टभिस्तु	=	आठ से
हरेद्भागम	=	भाग देना
योऽधिको	=	जिसकी काकिणी अधिक हो (अंक अधिक हो) वह हारता है तथा जिसकी काकिणीह का अंक कम हो वह जीतता है।

2.6 उपयोगी पुस्तकें

1. गृहवास्तुप्रदीप, डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
2. वृहद्वास्तुमाला, सम्पादक – डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, डॉ. रवि शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन
3. वस्तुसारसंग्रह, लेखक – आचर्य श्री कमलाकान्त शुक्ल, सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी
4. भवनभास्कर, लेखक – राजेन्द्र कुमार धवन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी संबत 2057, गीता प्रकाशन गोरखपुर

5. वास्तुचिन्तामणि, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बड़जात्या, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैन संस्कृति न्यास, ज्योति निलय गरुड़ खाम्ब चौक इतवारी नागपुर
6. शिल्पदीपक, सम्पादक – डॉ. श्री कृष्ण जुगनु, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी

2.7 बोध प्रश्न

1. वास्तु की अवधारणा पर अपना मत प्रदर्शित कीजिए ?
2. वास्तुशास्त्र के धार्मिक महत्व पर प्रकाश डालिए ?
3. ग्रामवास विचार कीजिए ?
4. वर्णो के अनुसार भूमि लक्षण बताइये ?
5. शल्यानयन विचार लिखिए ?
6. भवन में मुख्यद्वार विचार कीजिए ?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY